

4, 20. मही त्रीणामित्यनुमल्य *indem er dem Weggehenden das Lied mahl u. s. w. nachruft* ँच. ग्रन्थ. 3, 10, 7. आश्रावयिष्यत्तम् ङा. 1, 3. निपूतान् 2, 7. पृथिवी प्रतिगृह्णातिव्यानीतास्वनुमल्यते 3, 13. तं देवा अन्वमल्यता नः प्रणु ङा. Br. 1, 3, 2, 6, 4, 5, 8, 2, 4. प्रच्यवमानम् 3, 6, 4, 13. पिन्वमानम् 14, 2, 2, 27. 9, 2, 5. उच्छ्रियमाणम् ँच. ग्रन्थ. 2, 8, 16, 10, 5. तं दक्षमानमनुमल्यते प्रेक्षि u. s. w. 4, 4, 6. 3, 25. 7, 11. का. 58. 64. 63. 77. 80. 82. का. 58. Up. 2, 15. तथानुमल्यतास्तेन *mit diesen Worten von ihm entlassen* MBu. 3, 39. रथमारोप्य कृत्तेन यत्र कर्णो ऽनुमल्यतः (= उपजापितः Schol.) so v. a. *ernahmt* 1, 511. — 2) *mit einem Spruche besprechen* (vgl. u. अभि), *einsegnen*: प्रनुःशेफं पशुं यूपे निबन्धनानुमल्यतम् R. GORR. 1, 64, 24. पार्थीस्तान् जगुस्तदा । चत्वारस्ते चतसृणां शतान्दानुमल्यताः 73, 24. विमृष्टश्च वामदेवानुमल्यतो मेधो ऽश्चः UTTARARĀMA. 29, 1 v. u. कुम्भैर्हवैश्चानुमल्यतैः (अभिमुखितैः ed. Bomb.) MBu. 8, 387. अस्त्रम् — तदध्यायानुमल्यतम् (अभिमुखितम् ed. SCHL.) R. GORR. 2, 103, 49. MBu. 3, 879. 1647. 14960. 12175. शैरस्त्रानुमल्यतैः (अभिमुखितैः DRAUP. 8, 54) 15769. 16381. 5, 7174. 8, 4721. — 3) *Jmd um Erlaubniss bitten* (sich entfernen zu dürfen): सुदेक्षामनुमल्य MBu. 4, 384. Buāg. P. 6, 19, 3 (= पृष्टा Schol.). — 4) *Jmd die Erlaubniss erteilen*: ब्रह्मणा चानुमल्यतः Buāg. P. 4, 7, 16. — Vgl. अनुमल्यण.

— अभि *anreden, sprechen zu, mit einem Spruche besprechen, — weihen* Ait. Br. 3, 27. 8, 6. तं प्रजापतिरेतयर्चामल्यत 12, 20. समानं मल्लं मभि मल्ये वः RV. 10, 191, 3. TS. 1, 6, 8, 3. ङा. Br. 1, 7, 2, 16. पशून् 6, 3, 2, 1. 14, 9, 2, 6. 27. KĀT. ङा. 2, 4, 21. ँच. ग्रन्थ. 1, 3, 4. का. 3. 12. 17. शालां संप्रोक्ष्याभिमल्य्याभिनिगद्य 66. 136. सूच. 1, 138, 18. fg. 372, 1. MĀRK. P. 99, 11. प्रुद्धशेद्रमयोर्धं मां तुलामित्यभिमल्ययेत् JĀG. 2, 102. यन्मे ऽद्य रेत इत्याभ्यां स्वात्रं रेतो ऽभिमल्ययेत् 3, 278. पिण्डाग्नायद्या चाभिमल्ययेत् 326. पिण्डमभिमल्य Varāh. Br. S. 44, 19. 22. पानीधैरभिमल्यतैः MBu. 7, 2949. 8, 387 (ed. Calc. अनुमल्यतः). स्रजश्च विविधाकारा जयार्चनभिमल्यताः HARIV. 13729. MĀRK. P. 61, 15. Verz. d. Oxf. H. 93, b, N. (आम्रपालम्) कृदयेनाभिमल्य MBu. 2, 793. पशुरसो यो ऽभिमल्य कृतो कृतः AK. 2, 7, 25. H. 829. अस्त्रं वायव्यमभिमल्य MBu. 1, 8248. 3, 683. 7, 6253. 9407. HARIV. 10761. अस्त्रम् — तदध्यायभिमल्यतम् अनुमल्यतम् ed. GORR.) R. 2, 96, 50. KATHĀS. 30, 89. Buāg. P. 5, 9, 17. रया मुष्टिरिपीकाणां मयास्त्रिणाभिमल्यता MBu. 1, 5160. R. 2, 96, 44. शैरस्त्राभिमल्यतैः (v. l. अनुमल्यतैः) DRAUP. 8, 54. HARIV. 6776. R. 6, 36, 65. (रामम्) वसिष्ठेन मङ्गलैरभिमल्यतम् so v. a. *begrüßt* R. 1, 24, 2. आशीर्भिक्षाभिमल्यतः Buāg. P. 4, 9, 45. भरतम् — आतिथ्येनाभ्यमल्यतम् (न्यमल्यतम् ed. SCHL.) so v. a. *bot ihm Gastfreundschaft an* R. GORR. 2, 100, 1. ततो ऽहं मीमांसामभिमल्य (आमल्यतम् v. l. प्रस्थिता *Lebewohl sagend* PRAB. 111, 4. — Vgl. अभिमल्यण.

— आ *Jmd anreden, fragend oder auffordernd zu Etwas (dat.) ansprechen*: आत्मन्नात्मन्निवामल्यत TBR. 2, 3, 21, 1. तस्मै ह स्मामल्यमाणो न प्रतिप्रणीति ङा. Br. 1, 4, 1, 10. 12, 6, 1, 11. 5, 2, 1, 10. 4, 2, 9. 7, 2, 1, 11. 14, 4, 2, 1. नामभिः 3, 1, 15. PAÑĀT. Br. 13, 3, 24. स ह ससन्निधा अमल्ययां चक्रे ङा. Br. 11, 8, 2, 1. 5. KĀT. ङा. 2, 2, 9. 4, 4, 19. 11, 1, 19. 19, 1, 18. ँच. ङा. 1, 1. प्रातरनुवाक्य 4, 13. पशुरेलाशायां ङा. 5, 19, 1. 13, 1. KĀND. Up. 4, 4, 1. KAUSH. Up. 4, 19. BHATT. 9, 98. 19, 7. काङ्क्षितस्यास्य ते सिद्धये R. GORR. 1, 61, 3. अकृमामल्ये सर्वान्मर्त्योन् — यज्ञसाक्षकरान् *ich will sie auffordern, dass sie dir Beistand leisten*, R. SCHL. 1, 39, 3.

आमल्ययधं राष्ट्रेषु ब्राह्मणान्भूमिपानध । विशश्च मान्यान् शूद्राश्च सर्वानानपतेति च ॥ *auffordern, einladen* MBu. 2, 1244. P. 2, 1, 8. Sch. M. 3, 191. PAÑĀT. 20, 20. कुमारकेणानेन बृम्भकास्त्रमामल्यतम् *herbeigerufen* UTTARARĀMA. 96, 6. आमल्यत *gebeten* Buāg. P. 3, 3, 6. पुत्रमामल्ययामास Ait. Bu. 7, 14. 17. MBu. 4, 64. Verz. d. Oxf. H. 94, b, 35. अन्यतरं पुरुषमामल्ययेत् गच्छ तं भोः SADDH. P. 4, 17, a. श्रूयतामिति चामल्य प्रकृष्टो वाक्यम्ब्रवीत् R. 1, 1, 8. MĀRK. P. 73, 33. 51. आमल्ये वा भगवन्मुखमभ्युषितो ऽस्मि निशाम् so v. a. *ich begrüße dich* R. 3, 17, 2. 1. MBu. 3, 16172. आहता मल्यताः (entweder zu verbinden oder eine Elision anzunehmen) 12, 10282. Insbes. Jmd (acc.) *Lebewohl sagen, sich bei Jmd verabschieden*: ब्रह्मचारो प्रवत्स्यन्नाचार्यमामल्ययेत् ङा. GR. 2, 18. R. 2, 92, 7. 3, 33, 43. act. MBu. 2, 2560. 3, 16735. R. 2, 39, 38 (38, 47 GORR.). आमल्ययितुम् 112, 31. RĀGA-TAR. 1, 373. आमल्य MBu. 1, 8066. 2, 40. 2562. 3, 2243. 2295. 3030. 3, 5938. R. 2, 31, 33. KUMĀRAS. 6, 94. VID. 50. KATHĀS. 29, 22. 30, 77. 43, 234. 49, 35. 50, 154. Buāg. P. 1, 6, 38. आमल्ययिता MBu. 3, 1737. आमल्यत KATHĀS. 4, 131. — Vgl. आमल्यण fig.

— उपा *Jmd anreden, auffordern zu* (loc. oder dat.): तां वाता वाहमित्युपामल्य Buāg. P. 1, 8, 45. श्रूयतामित्युपामल्य तमृषिं प्रत्यभाषत R. GORR. 1, 1, 8. 27, 15. 3, 4, 5. उपामल्यत 1, 61, 11. Buāg. P. 8, 9, 8. यौवराज्याभियेके च तामुपामल्य R. GORR. 2, 20, 17. इत्युपामल्यतो राज्ञा गुणानुकथने हरेः Buāg. P. 2, 4, 11. 8, 27. अवनितलपरिपालनाय 5, 1, 6. Jmd *Lebewohl sagen, sich bei Jmd verabschieden*: मामुपामल्य MBu. 3, 7338. राज्ञा (gon.) चैवमुपामल्य वैदर्भाभ्यां (dat.) विशेषतः HARIV. 6114.

— सना *Jmd (acc.) Lebewohl sagen*: युधिष्ठिरं समामल्य MBu. 2, 42. anrufen, herbeirufen Verz. d. Oxf. H. 94, b, 42.

— उप *herzurufen, zusichrufen*: ते रत्नास्युपामल्यत तान्यब्रुवन् TS. 2, 4, 1, 1. अन्नयैर्देवा अग्निमुपामल्यत रक्षयेर्पितरौ यमम् *durch* (das Versprechen von) *Speise bewegen die Götter Agni zum Kommen* 2, 6, 6, 5. 6, 1, 2, 2, 1. ङा. Br. 1, 6, 2, 13. स्त्री पुंसोपामल्यता 3. 2, 1, 19. 12. 4, 2, 6. 14, 9, 4, 5. 4, 7. KĀND. Up. 2, 13, 1. 5, 8, 1. ङा. 15, 23, 3. KAUSH. Up. 2, 1. R. GORR. 2, 61, 6. मैथुनायोपामल्यता *aufgefordert zu* HARIV. 629. राजा रक्षसि दुष्टं (so der Comm.) हृदं दर्शनायोपामल्ययेत् *fordere auf zu erscheinen* KĀM. NĪTIS. 6, 11. तस्मिन्कृते तदा देवो कीर्चकनोपमल्यता *angegangen, gebeten, beredet* MBu. 4, 439. 531. प्रियामनुगतः कामी वचोभिरुपमल्यतम् (= प्रसादयन् Schol.) *beredend, zu gewinnen suchend* Buāg. P. 9, 18, 35. भोजनेनोपमल्यतम् so v. a. *Speise anbietend* MBu. 13, 6463. उपमल्यत *angeredet* DAṢAK. in BENF. Chr. 197, 10. उपमल्य BENF. Chr. 43, 11 (= MBu. 3, 7338) *fehlerhaft für उपामल्य*. — Vgl. उपमल्यण fig.

— अन्त्युप act. *mit einem Spruche besprechen* MBu. 8, 4720.

— नि *Jmd einladen, med.* M. 3, 187. JĀG. 1, 225. MBu. 4, 2944. 4, 2340. 3, 3467. R. 1, 12, 18 (17 GORR.). 32, 18. RAGU. 11, 32. act. वने MBu. 3, 13305. 12, 9821 (प्रत्युक्ता *mit der ed. Bomb. zu lesen*). अद्दिपु 13, 4301. R. GORR. 1, 33, 18. 3, 32, 52. KATHĀS. 43, 222. निमल्य RĀGA-TAR. 1, 66. निमल्यताम् HARIV. 4336. स यमोत्सवमाहृत्यं द्रष्टुं कृष्टो न्यमल्यत RĀGA-TAR. 1, 334. निमल्यतो द्विजः पित्र्ये M. 3, 188. 189. पुत्र्यं दातुम् HARIV. 7133. 7704. 7707. 11039. RAGU. 13, 59. SP. 2699. KATHĀS. 39, 151. RĀGA-TAR. 3, 445. राजभवने 4, 13. PAÑĀT. 243, 21. अन्यत्रभोजने PAÑĀT.